Shri Mahakali Khadagmala Stotram

श्री महाकाली खड्गमाला-स्तोत्रम्

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.yogeshwaranand.org
www.baglamukhi.info

मनुष्य के लिए तंत्र सदैव से ही जिज्ञासा उत्पन्न करने वाला तत्व रहा है। तंत्र केवल मात्र मंत्र जप अथवा साधना प्रयोग ही नहीं है, बल्कि यह मनुष्य को जीवन के विषय में ज्ञान प्रदान करता है, तंत्र उसे समझाता है कि वह जो मल और विकारों से भरा जीवन जी रहा है, उसका उद्देश्य यह नहीं है अपितु कुछ और है।

देवी भागवत के अनुसार तीन महाशक्तियां हैं- ज्ञान, क्रिया और अर्थ। ये तीनों महाशक्तियां महासरस्वती, महाकाली और महालक्ष्मी के रूप में जानी जाती हैं। ज्ञान रूपिणी, ज्ञान दायिनी शक्ति महासरस्वती के रूप में पूजिता है, जो सम्पूर्ण ज्ञान प्रदान करने में सक्षम है, यह ज्ञान सम्पूर्ण प्रकृति का ज्ञान है, जिससे एक साधक प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को जान लेता है इसके साथ ही साथ वह अपने आत्म तत्व से भी परिचित हो जाता है।

जो साधक महालक्ष्मी की शक्ति के रूप में उपासना करता है, वह समस्त प्रकार की सिद्धियों का ज्ञाता होता है और भौतिक रूप से उसे समस्त अर्थों की प्राप्ति होती है। इस ब्रह्माण्ड में जितने प्रकार की भी रत्न राशी है वह सभी मानव देह में उपलब्ध है, जो महालक्ष्मी की कृपा से उसे प्राप्त होती है और वह सम्पूर्ण ऐश्वर्यों को भोगता है।

यदि 'क्रिया' रूप में देखें तो महाकाली सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को चलायमान करने वाली शक्ति है। इनकी साधना से साधक काल एवं ओम् ज्ञान, जिससे सृष्टि का उद्भव हुआ है, जिससे सृष्टि गतिमान है, उसका ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है। मां काली की साधना करने से साधक प्रचण्ड शक्ति को प्राप्त करता है। उनकी साधना से साधक ब्रह्माण्ड की शक्ति

से जुड़ता है, जो मातृ रूप में उसे हर ओर श्रेष्ठता प्रदान कराती है।

प्रस्तुत खड्गमाला मन्त्र का रहस्य यह है कि मां महाकाली घोर अट्ठाहास करते हुए कहती हैं कि हे शिव! देख ये चन्द्रमा है, ये सूर्य है, ये तारागण हैं, ये ब्रह्माण्ड मंडल है, ये जीव-जन्तु हैं, ये सूक्ष्म से ग्रह हैं, ये ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र हैं, जिन्हें मैंने तेरे लिए ही निर्मित किया है, मैं ही इन सबकी रचना करने वाली हूँ। यदि ये सब तुझे पसंद नहीं हैं तो मैं इन सबको मिटा देती हूँ, इन्हें बांध देती हूँ। यदि ये सब या इनमें से कोई भी तेरी आज्ञा का पालन नहीं करते हैं, और मनमानी करते हैं तो मैं इनका भक्षण कर लेती हूँ। यदि ये तेरी स्तुति नहीं करते हैं तो मैं इनका निस्तारण कर दूंगी। तेरे चरणों में यदि इनका मस्तक नहीं झुकता है तो मैं इनका मर्दन कर दूंगी। सभी को शिव का शासन मानना होगा..... शिवशासनतः.....शिवशासनतः, केवल और केवल शिव का शासन सभी को मानना होगा और शिव पर शासन मेरा औंर केवल मेरा होगा।

साधक को चाहिए कि देवी का पहले सर्वांग पूजन कर, भगोदक से तर्पण और पंच मकारों से पूजन करे। इनकी पूजा से बढ़कर और क्या हो सकता है! ब्रह्मादि पद सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। इनके एक, दो, तीन क्रम से मंत्र होते हैं। इन

मंत्रों के सम्बन्ध में शत्रु मित्र आदि का विचार नहीं किया जाता है। इनके मन्त्र का जप करने वाला सद्गति को प्राप्त होता है। इस समय अन्य सभी देवता निद्रा में मग्न हैं केवल कालिका ही जाग्रत है।

इस खड्गमाला का पाठ करने से पुत्र हीन को पुत्र, धनहीन को धन की प्राप्ति होती है। वह धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारों का अधिकारी होकर दूसरों को वर प्रदान करने वाला बन जाता है। उसे देखकर संसार मुग्ध होता है। क्रोध उसे छोड़ देता है, गंगादि तीर्थ क्षेत्रों के और अग्निष्टोमादि यज्ञों के पुण्य का वह फल भोगने वाला होता है। उसके समस्त शत्रु स्वतः ही उसके दास बन जाते हैं, समस्त अरिष्ट ग्रह, भूत पिशाच आदि उसके दर्शन मात्र से ही निस्तेज हो जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि उसके लिए तीनों लोकों में कुछ भी असम्भव नहीं रहता। महाकाली की कृपा से उसके समस्त कार्य केवल विचार मात्र से ही पूर्ण हो जाते हैं।

खड्गमाला का पाठ करने के लिए सर्वप्रथम विनियोग करें :

विनियोग

ओम् अस्य श्री अखण्डाघोर-दिव्य-शक्त्यस्त्र त्रैलोक्य-निवारण-खड्ग-माला-महा-मन्त्रस्य दिगम्बरो भगवान् शरभ ऋषिः, गायत्रयादि-सप्त-छन्दांसि, आद्या भगवती महान्ता महा-काली देवता, हृकृल्यौं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रीं कीलकं, महान्ताद्या कालिका हृदयं , मम समस्त पाप क्षयार्थं क्षेमस्थैर्यायुरारोग्याभि- वृद्धयर्थं मोक्षादि-चतुर्वर्ग-साधनार्थं च श्री महामाया-प्रीतये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास

दिगम्बराय भगवान् शरभ ऋषये नमः शिरसि।

गायत्रयादि सप्त छन्देभ्यो नमः मुखे।

आद्या-भगवती-महान्ता महाकाली देवतायै नमः हृदि।

हृकृल्यौं-बीजाय नमः नाभौ।

ह्रीं शक्तये नमः गुह्ये ।

क्रीं कीलकाय नमः पादयोः।

महान्ताद्या-कालिकायै नमः सर्वांगे।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

कर-न्यास

ओम् नमो अलक्ष्य-प्रताप-विजय-भगवति अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

ह्रीं नमो भगवति सहस्त्र-वदने तर्जनीभ्यां स्वाहा ।

श्रीं नमो भगवति परमेश्वरि रक्त-चामुण्डे मध्यमाभ्यां वषट् ।

क्रीं चण्ड-तीव्र-ज्वाला-दष्ट्रां-कराल-वदने अनामिकाभ्यां हुं ।

ओम् ह्रीं श्रीं क्रीं कालाग्नि-रूद्र-स्वरूपे कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ।

ओम् हृकृल्यौं नमो भगवति महा-कालिके करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादि न्यास

ओम् नमो अलक्ष्य-प्रताप-विजय-भगवति हृदयाय नमः ।

ह्रीं नमो भगवति सहस्त्र-वदने शिरसे स्वाहा ।

श्रीं नमो भगवति परमेश्वरि रक्त-चामुण्डे शिखायै वषट् ।

क्रीं चण्ड-तीव्र-ज्वाला-दष्ट्रां-कराल-वदने कवचाय हुं ।

ओम् ह्रीं श्रीं क्रीं कालाग्नि-रूद्र-स्वरूपे नेत्र-त्रयाय वौषट् ।

ओम् हृकृल्यौं नमो भगवति महा-कालिके अस्त्राय फट् ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

ध्यान

मेघांगी शशि-शेखरां, त्रि-नयनामानन्द-सवंर्द्धिनीम्

नग्नां वा नृ-करां वरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा रतिम्।

कालस्यावृत्यांकुशं प्रमथतीं सव्ये ह्यभीतिं वरम्,

दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे।।

खड्गमाला पाठ

भा-लुप्त कालि! कालीं कर-धृत-कपाल-कराल-करवालीं कच-वृत-कपोल पालीं काली-माली-वृतां वन्दे। ओम् हृकृल्यौं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं महान्ताऽद्या-कालिके! ह्रीं श्रीं क्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

ओम् ह्सौ नमो अलक्ष्य-प्रताप-विजय-भगवति! मम सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय, कामान् स्फुर स्फुर, प्रस्फुर प्रस्फुर, तर तर, अनुपमा घोराति-घोर सर्वं चट चट, प्रचट प्रचट। सूर्य-सोमाग्नि-नेत्रायै सहस्त्राष्ट-भुजायै अघोर-भीम-भयंकरायै नर-कराम्बर-धरायै युग-युगान्ताग्नि-ज्वालादित्य-प्रचण्डायै त्रयम्बकायै काल -रूद्र-स्वरूपिण्यै हुं हुं, शत्रु वाक् स्तम्भिन्यै आत्म विरोधिणां शिरो-ललाट मुख नेत्र कर्ण नासिकोरू पाद रेणु दन्तोष्ठ जिह्वा

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

तालु गुह्य गुद कटि सर्वांगेषु केशादि पाद पर्यन्तं पादादि केश पर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय, मारय मारय, क्रों स्वाहा।

ओम् क्ष्म्लं ह्रीं श्रीं क्रीं नमो भगवति, सहस्त्र वदने, सकल जनोपद्रव नाशिने, सर्व दुष्टग्रह गज घण्टा सम्प्रहरणानेक कोटि सिंह वाहने ,महा वदने, महा दुर्धर्ष बल पराक्रमे अत्यद्भुते अपराजिते, पर मन्त्र-यन्त्र-तन्त्राणि छेदय छेदय, आत्म मन्त्र यन्त्र तन्त्राणि रक्ष रक्ष, ग्रहं निवारय निवारय, व्याधिं विनाशय विनाशय, दुःखं हर हर, दारिद्रयं निवारय निवारय। सर्व मन्त्र स्वरूपिणि, सर्व यन्त्र स्वरूपिणि, सर्व तन्त्र स्वरूपिणि, वेदाद्यखिल-शास्त्र-स्वरूपिणि, षट्दर्शनादि बोध स्वरूपिणि चैतन्यानन्द स्वरूपिणि! सर्वास्त्र-प्रयोग-स्वरूपेण मम सर्व दुष्ट-ग्रह भूत-ग्रह आकाश-ग्रह पाताल-ग्रह सर्व चाण्डाल-ग्रह यक्ष-ग्रह किन्नर-ग्रह किम्पुरूष-ग्रह ब्रह्मराक्षस वेतालादि-ग्रहान् छिन्धि छिन्धि, ऐं ऐं ऐं, ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं,चां चां चां, मुं मुं मुं, डां डां डां, यैं यैं यैं, नं नं नं, मं मं मं, खें खें खें, फट् फट्, शीघ्रं घन घन, आवेशय आवेशय, भस्मी-कुरू भस्मी-कुरू, कालिकायै मदीय सर्व-शत्रून् समर्पयामि! वद वद, मम सर्वदुष्टान् मर्दय मर्दय, मारय मारय, शोषय-शोषय, चण्डय चण्डय, प्रचण्डय प्रचण्डय। चण्डिकायै रं रं रं, क्षं क्षं क्षं, चं चं चं, डं डं डं, क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः, ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः, हूं फट् स्वाहा।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

ओम् ङ् म्ल स्फ्रें ह्रीं श्रीं क्रीं नमो भगवति, परमेश्वरि, रक्त-चामुण्डायै, प्रज्वाल-मुखायै दंष्ट्रा कराल-घोरायै ह्रुं ह्रुं कर्पूरा-मोद-परिमलांगायै नमः। ईं ईं ईं श्याम-महा-श्याम-वज्र-वैडूर्य-मणि-माणिक्य-मुकुट भूषणायै, ओम् स्फुर अघोर-रूपायै, व्याघ्र-चर्म-परिधानायै, शूलासि-वज्र-खटवांग-पाश-कपाल-मुद्गल-चक्र-तोमर-परशु भिन्दिपाल-शंख-खेटक-शराव-रूच-हस्ति-कुन्तल-शतघ्नि-भुशुण्ड -मुसल-गदायुधैः दम दम, स्वादय स्वादय, क्रूरं चण्ड-तीव्र-ज्वाला-दंष्ट्रा-कराल-वदनायै कृष्ण-शरीरायै नाग-यज्ञोपवीतिने हुं हुं ताप-रूपायै ह्रुं ह्रुं सौर-शक्ति-गारूड-वारूण-सार्प-पार्वत-वह्नि-दैवत-गणेश- विनायकादि-अघोर-नारायण-विष्णु-ब्रह्म-रूद्र-वज्रास्त्राणि भंजय भंजय, निवारय निवारय। तेषां मन्त्र-यन्त्र-तन्त्राणि विध्वंसय विध्वंसय, भस्मी कुरू भस्मी कुरू, अनन्त-घोर-ज्वर-मरण-भयं क्षय-कुष्ठ-व्याधिं विनाशय विनाशय, एकाहिक-द्वयाहिक-त्रयाहिक-चातुर्थिक-सांसर्गिक-वर्तमानार्ध- मासिक-पंच-मासिक-षण्मासिक-सांवत्सरिक-ज्वरानुभूत-कृत् पिशाच-कृत् शाकिनी-डाकिनी-कृत ग्रह-वेताल-कृत् दिवाचारि रात्रिचारि सन्ध्याचारि महाभूत कृत् पीडा ज्वरान् नाशय नाशय, त्रोटय त्रोटय, स्फोटय स्फोटय, वारय वारय, मारय मारय, सर्व-शूलान् दारय दारय, उदर-शूलान् मूर्ध्नि-शूलान्

गुल्म-शूलान् गुल्मान् अति-विषान् अपस्मारान् मूत्र-कृच्छ्रान् भगन्दरान् शूलान् उद्वाहान् कुष्ठान् वान्तिकान्, शमय शमय, त्रोटय त्रोटय, बन्ध बन्ध, विद्वेषय विद्वेषय, भंजय भंजय व्याघ्र-पादान्त-सन्निपात् वातादि शारीरिक कफ-पित्त-कास-श्वास-श्लेष्मादिकं दह दह, छिन्धि छिन्धि, श्री महादेव-निर्मित-मोहन-वश्याकर्षणोच्चाटन-कीलन-विद्वेषण-मारणादि-षट्-कर्माणि वृत्य हुं हुं फट् स्वाहा।

ओम् नमो द्विभुजे, आद्ये, भगवति, कालिके! क्रीं श्रीं क्रीं ऐं क्लीं सौः परमेश्वरि ! वात्-ज्वर-मरण-भयं छिन्धि छिन्धि, हन हन, भूत-ज्वर प्रेत-ज्वर पिशाच-ज्वर रात्रि-ज्वर अमित-ज्वर सन्निपात-ज्वर बाल-ज्वर कुमार-ज्वर ग्रह-ज्वर ताप-ज्वर ब्रह्म-ज्वर विष्णु-ज्वर रूद्र-ज्वर गणेश-ज्वर मारी, प्रवेश-ज्वर कामादि-विषम-ज्वर मारी ज्वर सर्वदेव-ग्रह योगी-ग्रह योगिनी-ग्रह दैत्य-ग्रह दानव-ग्रह राक्षस-ग्रह ब्रह्मराक्षस-ग्रह सिद्ध-ग्रह यक्ष-ग्रह विद्याधर-ग्रह किन्नर-ग्रह गन्धर्व-ग्रह अप्सरा-ग्रह भूत-ग्रह प्रेत-ग्रह पिशाच-ग्रह कूष्माण्ड-ग्रह गजादि-ग्रह पूतना-ग्रह बाल-ग्रह सूर्यादि-नव-ग्रह मुद्गल-ग्रह पितृ-ग्रह वेताल-ग्रह शत्रु-ग्रह राज-ग्रह चौर-वैरि-ग्रह नेतृ-ग्रह देवता-ग्रह आधि-ग्रह व्याधि-ग्रह अपस्मारादि ग्रह-ग्रह-ग्रह पुर-ग्रह उरग-ग्रह सरज-ग्रह उक्त-ग्रह डामर-ग्रह उदक-ग्रह अग्नि-ग्रह आकाश-ग्रह भू-ग्रह वायु-ग्रह शालि-ग्रह धान्यादि-ग्रह

विषय-ग्रहानाति-ग्रह घोर-ग्रह छाया-ग्रह सर्प-ग्रह विष-जीव-ग्रह वृश्चिक-ग्रह काल-ग्रह शाल्य-ग्रहादि सर्वग्रहान् नाशय नाशय। कालाग्नि-रूद्र-स्वरूपेण दह दह, अनुनय अनुनय, शोषय शोषय, मुखय मुखय, कम्पय कम्पय, भक्षय भक्षय, निमीलय निमीलय, मर्दय मर्दय, विद्रावय विद्रावय, निधन निधन, स्तम्भय स्तम्भय, उच्चाटय उच्चाटय, उष्टन्धय उष्टन्धय, मारय मारय, चण्ड चण्ड, प्रचण्ड प्रचण्ड, क्रोध क्रोध, ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल। ज्वालादित्य-वदने! उग्र ग्रस, उग्र ग्रस, विजृम्भय विजृम्भय, घोषय घोषय, मारय मारय, हन हन। पर राष्ट्र गजाश्व-रथ-सैन्य-शस्त्रास्त्र-बलं स्तम्भय स्तम्भय, उच्चाटय उच्चाटय, मारय मारय, खादय खादय, विदारय विदारय, भीषय भीषय, कम्पय कम्पय, भक्षय भक्षय, त्वरित त्वरित, बन्धय बन्धय, प्रमुख प्रमुख, स्फुट स्फुट, ठं ठं ठं ठं, क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः, हुं फट् स्वाहा।

ओम् हंसो ह्रीं क्रों हंसः, ह्रीं श्रीं क्रीं, सर्वा-दिशो बध्नामि, महेश्वरं बध्नामि, पितामहं बध्नामि, महाविष्णुं बध्नामि, गणेश बध्नामि, विनायकान् बध्नामि, कार्तिकं बध्नामि, दश दिक्पालान् बध्नामि, सर्वानसुरान् बध्नामि, ब्रह्माद्यस्त्रान् बध्नामि, अघोरं बध्नामि, सर्वान् सुरान बध्नामि, सर्वान् द्विजान् बध्नामि, केशरीं बध्नामि, सत्वान् बध्नामि, व्याघ्रान बध्नामि, गजान् बध्नामि, चौरान् बध्नामि, शत्रून् बध्नामि, महामारीं बध्नामि,

सर्वा यक्षिणी बध्नामि, आब्रह्म-स्तम्भ-पर्यन्तं सर्वान् चराचर-जीवान् बध्नामि। माया-ज्वालिनि! स्तम्भ्य स्तम्भय, सर्व वादीन् मूकय मूकय, कीलय कीलय, गतिं स्तम्भय स्तम्भय, चौरादि-सर्वान् दुष्ट पुरूषान् बन्धय बन्धय, दिशा-विदिशा-रात्रयाकर्षण-पाताल-घ्राण-भू-चक्षुः शिरः श्रोत्रे हस्तौ पादौगतिं मतिं मुखं जिह्वां वाचां शब्द-पंचाशत् कोटि-योजन-विस्तीर्णान् भू-ब्रह्माण्ड-देवान् बध्नामि, मण्डलं बध्नामि, व्याघान क्रमय क्रमय, रक्ष रक्ष, हुं फट् स्वाहा।

ओम् क्ष्फ्रीं सोऽहं सः सोऽहं, ह्रीं श्रीं क्रीं, हसक्षमलवरयूं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं हसकरीं शं हं ह्रीं ओम् ह्रीं ल्ह्रीं लूं अः अं इं एं महा-घोरेशे, रूद्र-प्रताप-विजय भगवति, आद्ये, महाकालिके सर्वदोष हारिणि, सर्व-विघ्नोच्छेदिनि, सर्व दुष्ट भक्षिणि, सर्व पाप निकृन्तिनि, सर्व यन्त्र स्फोटिनि, सर्व श्रृंखला त्रोटिनि, सर्व मुद्रा द्राविणि, ज्वाला जिह्वे, उग्र कालिके! मम शान्तिं कुरू कुरू, स्वस्तिं कुरू कुरू, पुष्टिं कुरू कुरू, श्रियं देहि देहि, यशो देहि देहि, आयुर्देहि देहि, आरोग्यं कुरू कुरू, पुत्रान् पौत्रान् सर्व कामांश्च देहि देहि, भक्तिं देहि देहि, मम शरीरमाश्रित्य सर्व-सिद्धिं कुरू कुरू, सपरिवारं मां रक्ष रक्ष, क्षमस्वापराधं क्षमस्वापराधं, नमस्ते नमस्ते हृकृल्यौं ओम्।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

उपरोक्त खड्गमाला का दस हजार की संख्या में पाठ करने से पुरश्चरण सम्पन्न होता है। पुरश्चरण के उपरान्त एक हजार पाठों से मधु मिलाकर काले तिलों से होम करना चाहिए। प्रतिदिन पाठ करने से पूर्व मां महाकाली के यन्त्र पर आवरण पूजा करनी चाहिए। यदि षट्कर्म विधान करना हो तो शरभराज के सहस्त्राक्षरी मन्त्र के समान करना चाहिए।

सर्वप्रथम भगवती काली की दीक्षा गुरू मुख से प्राप्त करें एवं गुरूदेव से खड्गमाला करने की आज्ञा प्राप्त करें। जो व्यक्ति दीक्षित नही है वो यहां से अथवा अन्य पुस्तकों से पढकर इसका पाठ न करें अथवा नुकसान के लिए आप स्वयं जिम्मेदार हैं।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

महाविद्या महाकाली साधना

दस महाविद्याओं में भगवती काली का प्रथम स्थान है। वे ही मुख्य हैं और उन्हीं के उग्र और सौम्य दो स्वरूपों में अनेकानेक स्वरूप धारण करने वाली दस महाविद्याएं हैं। ये भगवान शिव की महाशक्तियां हैं जो अनन्त सिद्धियां प्रदान करने वाली हैं। यदि हम दार्शनिक दृष्टि से भी अवलोकन करें तो काल तत्व की प्रधानता सबसे ऊपर है। इसलिए महाकाली या काली ही समस्त विद्याओं की आदि हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि महाकाल की प्रिया काली ही अपने दक्षिण और वाम रूपों में दस महाविद्याओं के नाम से जानी गयी है। बृहन्नील तन्त्र भी स्वीकार करता है कि रक्त और कृष्ण भेद से काली ही दो स्वरूपों में प्रतिष्ठित हैं। कृष्णा दक्षिणा और रक्तवर्णा सुन्दरी के नाम से विख्यात हैं।

कालिकापुराण में काली के उद्भव के सम्बन्ध में वर्णन आया है कि हिमालय पर स्थित मतंग मुनि के आश्रम में एक बार सभी देवताओं ने जाकर महामाया की साधना की। उनकी साधना से प्रसन्न होकर मतंग मुनि की वनिता के रूप में महामाया ने देवताओं को दर्शन दिये। उन्होने देवताओं से पूछा कि तुम सब किसी साधना कर रहे हो? बस उसी समय महामाया की देह से काले पर्वत के समान वर्ण वाली एक दिव्य

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

स्त्री प्रकट हुई। उस महातेजस्विनी ने स्वयं ही देवताओं की ओर से उत्तर दिया कि ये लोग मेरी ही स्तुति कर रहे हैं। वह महातेजस्विनी स्त्री काजल के समान काली थी, जिस कारण उनका नाम 'काली' हुआ।

दुर्गासप्तशती में वर्णन आया है कि शुम्भ-निशुम्भ दानवों के अत्याचारों से दुखी होकर सभी देवताओं ने हिमालय पर जाकर पार्वती की देवी- सूक्त से आराधना की। उनकी स्तुति से प्रसन्न होकर देवी के शरीर से कौशिकी नाम की देवी का प्राकट्य हुआ। कौशिकी के पृथक होते ही मां पार्वती का स्वरूप कृष्ण रंग का हो गया, जिन्हें काली के नाम से जाना गया। नीलरूपा होने के कारण काली को तारा भी कहा गया है। 'नारद पांचरात्र' में वर्णन आया है कि एक बार मां काली के मन में विचार आया कि वे पुनः गौर वर्ण की बन जायें। बस यही विचार करके वे अन्तर्धान हो गयीं। कुछ समय बाद शिवजी ने नारद जी से उनका पता जानना चाहा तो नारद जी ने उनसे सुमेरू पर्वत के उत्तर में देवी के प्रत्यक्ष उपस्थित होने की बात बताई। भगवान शिव के आग्रह पर नारद जी वंहा गये। उन्होने देवी से भगवान शिव के साथ विवाह का प्रस्ताव रखा। विवाह का प्रस्ताव सुनकर देवी क्रोधित हो गयीं और उनके शरीर से एक अन्य षोडशी-विग्रह प्रकट हुआ और उस

विग्रह से एक अन्य छाया विग्रह का प्राकट्य हुआ, जिन्हें त्रिपुर भैरवी के रूप में जाना जाता है।

अनेक सम्प्रदायों के अनुसार काली की उपासना करने में भेद है। सामान्य रूप से दो रूपों में इनकी आराधना की जाती है। भव-बन्धन-मोचन में काली की उपासना सबसे उत्तम कही गयी है। शक्ति-साधना के दो पीठों में काली उपासना श्याम पीठ पर करनी उचित है। भक्ति मार्ग में तो किसी भी रूप में उन महामाया की उपासना फल प्रदान करने वाली है। लेकिन यदि सिद्धि की कामना हो तो इनकी उपासना वीर भाव से करनी चाहिए। साधना करने से जब साधक अहंता, ममता और भेद-बुद्धि का नाश होकर पूर्ण शिशुत्व का उदय हो जाता है अर्थात् वह किसी नन्हें बालक के समान क्रिया-कलाप करने लगता है तो भगवती का श्रीविग्रह साधक के समक्ष प्रकट हो जाता है। उस समय भगवती की छवि का वर्णन करना अत्यन्त ही दुर्लभ है। उनकी छवि उस समय अवर्णनीय होती है। उनका स्वरूप काजल के पर्वत के समान, दिग्वसना, मुक्तकुन्तला, शव के सिंहासन पर आरूढ़, मुण्डों की माला धारण किये हुए, मां काली का प्रत्यक्ष दर्शन साधक के जीवन को सफल बना देता है। उसे कृतार्थ कर देता है। यद्यपि तांत्रिक सम्प्रदाय में भगवती काली की उपासना दीक्षागम्य है अर्थात् गुरू दीक्षा लेने के उपरान्त ही साधक तांत्रिक साधना कर सकता है लेकिन यदि

वह देवी की शरण में सच्चे मन से, अद्वैत भावना से आ जाता है तो उनकी कृपा कोई भी प्राप्त कर सकता है। मन्त्र, विग्रह, पूजा, होम अथवा गुरू द्वारा प्रदत्त दीक्षा मंत्र के जप भक्तिभाव से करने पर मां काली अत्यन्त ही प्रसन्न हो जाती हैं और उनके प्रसन्न होने पर साधक को सहज ही उसके समस्त अभीष्टों की सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

कौल-कल्पतरू चण्डी में भगवती काली का विलक्षण स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि-

१. भवगती काली को श्मशान-वासिनी कहा जाता है। श्मशान में निवास करते हुए भगवती काली यही समझाती हैं कि- मैं वहीं हूँ, जहां मनुष्य सांसारिक ममता और मोह को छोड़ देते हैं। मेरे पास आकर वे अद्वैत ब्रह्म-ज्ञान को प्राप्त करते हैं।
२. श्मशान में सबको एकता का भाव होता है। क्या राजा और क्या रंक, सभी यंहा खाक में मिल जाते हैं। यंहा कोई भेद नहीं होता। भगवती काली इसी भेद-भाव-विहीन भूमि-श्मशान में रहती है। अतः भगवती काली को पहचानना है, तो भेद-भाव छोड़ना होगा।
३. भगवती काली श्याम रंग की हैं। अपने श्याम रंग से भगवती यही समझाती हैं कि मन को ऐसे लक्ष्य का साधन बनाओ, जंहा द्वैत भाव न हो, दूसरा प्रतीत न हो।

४.भगवती काली की चार भुजाएं हैं। चार भुजाओं से भगवती अपने भक्तों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करती हैं।

५.भगवती काली के पहले हाथ में कृपाण अर्थात् खड्ग है। कृपाण- तेज तत्व है। यह अविद्या को काटने का उपदेश देता है। इसी से धर्म की उपलब्धि होती है।

६. भगवती काली के दूसरे हाथ में मुण्ड है। मुण्ड का अर्थ, अर्थात् सार-भूत लक्ष्य की उपलब्धि होती है। भगवती मुण्ड को लेकर कहती हैं- जैसे मैंने पूर्ण शरीरमें से सार-भूत वस्तु ले ली है, वैसे तुम भी अविद्याा को काट कर सार-भूत ज्ञान ग्रहण करो, व्यर्थ वस्तुओं के चक्कर में मत रहो।

७. भगवती काली के तीसरे हाथ में वर-मुद्रा है, जो काम स्वरूपा है। इससे 'काम' की पूर्ति होती है। यंहा 'काम' से इन्द्रिय-प्रीति का आशय नहीं है, अपितु सुख-पूर्वक उत्कृष्ट जीवन से तात्पर्य है।

८. भगवती काली के चौथे हाथ में 'अभय' मुद्रा है, जो मोक्ष-स्वरूपा है। भय-रहित होना ही मोक्ष है।

९. भगवती काली भयानक मुख वाली हैं। अपने भयानक मुख से भगवती यह बताती हैं कि ब्रह्म-तत्व की प्राप्ति

हेतु भय को जीतना परम आवश्यक है। भय को जीतकर ही मनुष्य मेरे मार्ग की यात्रा में सफल हो सकता है।

१०. भगवती काली दिगम्बरा अर्थात् वस्त्रहीन हैं। वस्त्र वासना के पोषक होते हैं। वस्त्र-हीन होकर भगवती काली कहती हैं कि' मैं वासना-रहित हूँ। वासना का त्याग करके ही मनुष्य ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

महाकाली, महाकाल की वह शक्ति है जो काल व समय को नियन्त्रित करके सम्पूर्ण सृष्टि का संचालन करती हैं। आप दसों महाविद्याओं में प्रथम हैं और आद्याशक्ति कहलाती हैं। चतुर्भुजा के स्वरूप में आप चारों पुरूषार्थों को प्रदान करने वाली हैं जबकि दस सिर, दस भुजा तथा दस पैरों से युक्त होकर आप प्राणी की ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को गति प्रदान करने वाली हैं। शक्ति स्वरूप में आप शव के उपर विराजित हैं। इसका अभिप्राय यह है कि शव में आपकी शक्ति समाहित होने पर ही शिव, शिवत्व को प्राप्त करते हैं। यदि शक्ति को शिव से पृथक कर दिया जाये तो शिव भी शव-तुल्य हो जाते हैं। शिव-ई = शव । बिना शक्ति के सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और शिव शव के समान हैं।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इस सम्पूर्ण सृष्टि में शिव और शक्ति ही सर्वस्व हैं। उनके अतिरिक्त किसी का कोई आस्तित्व नहीं है।

वस्तुतः काली का शब्दार्थ है- कालः अर्थात् शिवः, तस्य पत्नी, काली ।काल+ङीष्।, अर्थात् शिव की स्त्री।

शास्त्र भी कहता है कि- एषैव पारमेश्वरी मूल-शक्तिः दुर्बलाधिकारिणामुपासना-सौकर्याय तन्त्रादि-शास्त्रेषु काली-तारादि-विविध नाम-रूपैः कल्पिता।

अर्थात् यही परमेश्वरी मूल-शक्ति दुर्बलों अर्थात् साकार उपासकों को सुविधा हेतु तन्त्र आदि शास्त्रों में काली, तारा आदि विविध प्रकार के नाम और रूपों से कल्पित है।

सामान्य रूप से जन साधारण को काली शब्द से देवी का ही बोध होता है। लेकिन यंहा एक प्रश्न यह उठता है कि- यह देवी कौन है, कैसी है, अर्थात् इसकी परिभाषा क्या है? यंहा यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि 'कालिका' शब्द इस प्रकार बनता है- क+आ+ल+इ+क+आ। 'क' अर्थात् ब्रह्म, 'आ' अर्थात् अनन्त, 'ल' अर्थात् विश्वात्मा, 'इ' अर्थात् सूक्ष्म, 'क' अर्थात् ब्रह्म, 'आ' अर्थात् अनन्त। इससे देवी के आद्यन्त-रहितत्व, अनन्तत्व, सूक्ष्मत्व ओर विश्वात्मकत्व का ज्ञान होता है।

इस साधना को आरम्भ करने से पूर्व एक साधक को चाहिए कि वह मां भगवती काली की उपासना अथवा अन्य किसी भी देवी या देवता की उपासना निष्काम भाव से करे।

उपासना का तात्पर्य सेवा से होता है। उपासना के तीन भेद कहे गये हैं :- कायिक अर्थात् शरीर से , वाचिक अर्थात् वाणी से और मानसिक- अर्थात् मन से।

जब हम कायिक का अनुशरण करते हैं तो उसमें पाद्य, अर्घ्य, स्नान, धूप, दीप, नैवेद्य आदि पंचोपचार पूजन अपने देवी देवता का किया जाता है। जब हम वाचिक का प्रयोग करते हैं तो अपने देवी देवता से सम्बन्धित स्तोत्र पाठ आदि किया जाता है अर्थात् अपने मुंह से उसकी कीर्ति का बखान करते हैं और जब मानसिक क्रिया का अनुसरण करते हैं तो सम्बन्धित देवता का ध्यान और जप आदि किया जाता है।

जो साधक अपने इष्ट देवता का निष्काम भाव से अर्चन करता है और लगातार उसके मंत्र का जप करता हुआ उसी का चिन्तन करता रहता है, तो उसके जितने भी सांसारिक कार्य हैं उन सबका भार मां स्वयं ही उठाती हैं और अन्ततः मोक्ष भी प्रदान करती हैं। यदि आप उनसे पुत्रवत् प्रेम करते हैं तो वे मां के रूप में वात्सल्यमयी होकर आपकी प्रत्येक कामना को उसी प्रकार पूर्ण करती हैं जिस प्रकार एक गाय अपने बछड़े के मोह में कुछ भी करने को तत्पर हो जाती है। अतः सभी साधकों को मेरा निर्देश भी है और उनको परामर्श भी कि वे साधना चाहे जो भी करें, निष्काम भाव से करें। निष्काम भाव वाले साधक को कभी भी महाभय नहीं सताता।

ऐसे साधक के समस्त सांसारिक और परलौकिक समस्त कार्य स्वयं ही सिद्ध होने लगते हैं उसकी कोई भी किसी भी प्रकार की अभिलाषा अपूर्ण नहीं रहती ।

मेरे पास ऐसे बहुत से लोगों के फोन और मेल आते हैं जो एक क्षण में ही अपने दुखों, कष्टों का त्राण करने के लिए साधना सम्पन्न करना चाहते हैं। उनका उद्देश्य देवता या देवी की उपासना नहीं, उनकी प्रसन्नता नहीं बल्कि उनका एक मात्र उद्देश्य अपनी समस्या से विमुक्त होना होता है। वे लोग नहीं जानते कि जो कष्ट वे उठा रहे हैं, वे अपने पूर्व जन्मों में किये गये पापों के फलस्वरूप उठा रहे हैं। वे लोग अपनी कुण्डली में स्थित ग्रहों को दोष देते हैं, जो कि बिल्कुल गलत परम्परा है। भगवान शिव ने सभी ग्रहों को यह अधिकार दिया है कि वे जातक को इस जीवन में ऐसा निखार दें कि उसके साथ पूर्वजन्मों का कोई भी दोष न रह जाए। इसका लाभ यह होगा कि यदि जातक के साथ कर्मबन्धन शेष नहीं है तो उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी। लेकिन हम इस दण्ड को दण्ड न मानकर ग्रहों का दोष मानते हैं।व्यहार में यह भी आया है कि जो जितनी अधिक साधना, पूजा-पाठ या उपासना करता है, वह व्यक्ति ज्यादा परेशान रहता है। उसका कारण यह है कि जब हम कोई भी उपासना या साधना करना आरम्भ करते हैं तो सम्बन्धित देवी - देवता यह चाहता है कि हम मंत्र जप के

द्वारा या अन्य किसी भी मार्ग से बिल्कुल ऐसे साफ-सुथरे हो जाएं कि हमारे साथ कर्मबन्धन का कोई भी भाग शेष न रह जाए। इसीलिए एक साधक को साधना काल के आरम्भ में घोर कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

इसे आप यूं मानकर चलिए कि एक बच्चा मां की गोद में मूत्र त्याग कर देता है तो क्या मां उसे गीले कपड़ों में ही पलंग पर लिटा देगी ? कदापि नहीं। वह पहले उसके कपड़े बदलेगी और फिर अपने पास लिटाकर उसे अपने वात्सल्य से भरपूर दुग्ध का पान करायेगी।

यही स्थिति मां काली अथवा अन्य किसी भी देवी की है। पहले वह आपके द्वारा कृत पापकर्मों से आपको स्वच्छ करेगी फिर अपनी गोद में लेगी।

मैं समझता हूँ कि आप मेरे कहने का तात्पर्य समझ गए होंगें। सर्वप्रथम अपने पूर्व जन्मों के कृत कर्तव्यों का परिणाम भोगें अथवा उन्हें संकल्प लेकर आगे के लिए सरका दें। इस क्रिया के माध्यम से आप वर्तमान में आने वाले संकटों से तो बच सकते हैं परन्तु आगामी जीवन में फिर इन कष्टों का सामना तो करना ही पड़ेगा।

मेरे अनुभव में यह भी आया है कि यदि कोई ब्राह्मण अथवा साधक आपकी कठिनाईयों अथवा कष्टों के

निवारण के लिए आपसे संकल्प लेकर आपके लिए अनुष्ठान करता है तो जो कष्ट आपको भोगने थे, वे कष्ट वह स्वयं भोगेगा। अन्तर केवल इतना ही होगा कि आप पूजा-पाठ नहीं करते हैं और वह ब्राह्मण यह सब करता है तो यदि आपको अपने दुष्कर्मों के कारण जो भयानक कष्ट झेलने थे उन्हें वो ब्राह्मण झेलेगा। क्योंकि प्रकृति का नियम है कि जो जैसा करेगा वैसा भोगेगा। परन्तु जितनी पीड़ा आपको होती, उतनी पीड़ा उसे नहीं होगी, क्योंकि वह आराधना करता है।

लेकिन उसे भोगना जरूर पड़ेगा।

भगवती काली के विभिन्न भेद हैं, यथा -

पुरश्चर्यार्णव के अनुसार :- काली ८ प्रकार की कही गयी हैं । १. दक्षिणाकाली २. भद्रकाली ३ श्मशान काली ४. कामकलाकाली ५. गुह्यकाली ६.धनकाली ७. सिद्धिकाली ८. चण्डीकाली ।

सम्मोहन तन्त्रानुसार :- काली के ७ भेद कहे गये हैं । १. स्पर्शमणिकाली २. चिंतामणि काली ३. सिद्धकाली ४. विद्याराज्ञी ५. कामकला काली ६. हंसकाली तथा ७. गुह्यकाली ।

जयद्रथयामल के अनुसार :- काली के ११ भेद कहे गये हैं । १. डम्बर काली २. गहनेश्वरी काली ३.एक तारा ४.

चण्डशाबरी ५. वज्रवती ६. रक्षाकाली ७. इन्दीवरी काली ८. धनदा ९. रमण्या १०. ईशानकाली ११. मन्त्रमाता ।

काली तन्त्र पर लगभग २५० ग्रन्थ हैं। उपरोक्त दिये गये भेदों के अतिरिक्त कुछ अन्य भेद भी हैं उनमें ८ विशिष्ट भेद हैं :-

१. संहार काली २. दक्षिण काली ३. भद्रकाली ४. गुह्य काली ५. महाकाली ६. वीरकाली ७. उग्रकाली ८. चण्डकाली ।

दीक्षा-क्रम

भगवती काली का दीक्षा-क्रम निम्नवत् है! सुधी साधक को दीक्षा इसी क्रम में लेनी चाहिए और एक योग्य गुरू को इसी क्रम में साधक को दीक्षित करना चाहिए ।

१ चिन्तामणि काली के एकाक्षरी मंत्र क्रीं की दीक्षा लें। इसे काली प्रणव भी कहा जाताहै।

२. स्पर्शमणि काली के हूं हूं बीज मंत्र की दीक्षा लें।
३. संततिप्रदा काली के क्रीं ह्रीं मंत्र की दीक्षा लें।
४. सिद्धिकाली के बीज मंत्र ओम् ह्रीं क्रीं मे स्वाहा मंत्र की दीक्षा लें।
५. दक्षिणा काली के मंत्र की दीक्षा लेकर साधना करें।
६. कामकला काली मंत्र की दीक्षा ग्रहण करें।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

७. हंसकाली के मंत्र की दीक्षा ग्रहण करें।

८. गुह्य काली के मंत्र की दीक्षा ग्रहण करें।

दक्षिणाकाली की साधना महाविद्या क्रममें भी होती है। अतः महाविद्या क्रम में दक्षिणा काली के उपरान्त भगवती तारा के सार्द्ध पंचाक्षर मंत्र की दीक्षा ग्रहण करनी चाहिए। उसके उपरान्त महाविद्या षोडशी के त्रयक्षर, पंचदशाक्षर एवं षोडशी मंत्र की दीक्षा ग्रहण करें। तदोपरान्त मां छिन्नमस्ता मंत्र की दीक्षा लेकर महाकाल एवं बटुक भैरव मंत्र की उपासना क्रमानुसार करें।

साधकों को स्मरण रखना चाहिए कि क्रम दीक्षा के अभाव में पग-पग पर हानि होती है, यथा- क्रम दीक्षा विहीनस्य सिद्धिहानिः पदे-पदे । (महाकाल संहिता)

षोडशी महाविद्या के समान ही काली आराधना में भी कादि हादि सादि आदि विद्याएं आती है। जिस मंत्र के आरम्भ में क आता है, वह कादि विद्या, जिस मंत्र के आरम्भ में ह आता है, वह हादि विद्या, जिस मंत्र के आरम्भ में वाग्बीज अर्थात् ऐं आता है, वह वागादि विद्या एवं जिस मंत्र के आरम्भ में हुं बीज आता है, उसे क्रोधादि विद्या कहा जाता है। जिस मंत्र के आरम्भ में नमः आता है, उसे नादिक्रम एवं जिस मंत्र के आरम्भ में द अक्षर आता है, उसे दादिक्रम कहा जाता है।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

ओम् प्रणव जिस मंत्र के आरम्भ में आता है, उसे प्रणवादि क्रम कहा जाता है।

भगवती काली के मंत्र-जप से पूर्व कुल्लुका आदि मंत्रों का भी जप किया जाता है। इनके प्रभाव से इष्ट-सिद्धि की प्राप्ति होती है। इसके सम्बन्ध में कहा गया है कि जो अधम प्राणी कुल्लुका आदि को न जानकर मंत्रों का जप करता है उसे सिद्धि हानि अवश्य ही होती है। अतः सभी साधकों के लिए आवश्यक है कि वे नीचे दिये गये मंत्रों का जप भगवती काली के मंत्रों के जप से पूर्व अवश्य ही करें।

कुल्लुका मंत्र :- क्रीं हूं स्त्रीं ह्रीं फट् । इस मंत्र का जप मूर्धा में १२ बार करना चाहिए।

सेतु :- ब्राह्मण एवं क्षत्रियों के लिए ओम्, वैश्यों के लिए फट् एवं शूद्रों के लिए ह्रीं सेतु मंत्र निर्धारित किये गये हैं। वर्गानुसार सेतु मंत्र का जप हृदय पर १२ बार करें।

महासेतु :- महासेतु क्रीं मंत्र का जप १२ बार कण्ठप्रदेश में करें।

निर्वाण जप :- नाभि में ओम् अं बोलकर मूल मंत्र बोले फिर मातृका का उच्चारण करें, यथा- ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङ. चं छं जं झं ञं टं ठं छं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

सं हं लं क्षं ओम् जपें। उसके बाद क्लीं बीज का स्वाधिष्ठान चक्र में १२ बार जप करें। तदोपरान्त ओम् ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं रां रीं रूं रैं रौं रः रमल वरयूं राकिनी मां रक्ष रक्ष मम सर्व धातून् रक्ष रक्ष सर्वसत्व वशंकरी देवि ! आगच्छ आगच्छ इमां पूजां ग्रहण ग्रहण ऐं घोरे देवि ! घोरे देवि ! ह्री सः परम घोर घोर स्वरूपे एहि एहि नमश्चामुण्डे ड र ल क स है श्री दक्षिण कालिके देवि वरदे विद्ये ! मंत्र का सिर में १२ बार जप करें। इसके बाद माता कुण्डलिनि का ध्यान करके अपने इष्ट मंत्र का जप करना चाहिए।

इसके उपरान्त मैं साधकों के लिए यथासम्भव कुछ मंत्रों का उल्लेख कर रहा हूँ, कृपया गुरूदेव से अनुमति प्राप्त कर इन मंत्रों की साधना करें । जिन साधकों ने गुरू दीक्षा ग्रहण नहीं की है कृपया यंहा देखकर वे मंत्र जप न करें। अन्यथा लाभ होने के स्थान पर हानि हो सकती है। सभी महाविद्याओं एवं उग्र साधनाओं में गुरू दीक्षा एवं गुरू कृपा आवश्यक है। इसलिए जो भी साधना करें गुरूदेव से अनुमति प्राप्त करके ही करें।

भगवती काली का एकाक्षरी मंत्र

‘ क्रीं ’ (Kreem)

यह मंत्र साधक की सभी अभीष्टों की सिद्धि प्रदान करने वाला, घर में सुख-शान्ति एवं आर्थिक उन्नति प्रदान करने वाला है । इस मंत्र को चिन्तामणि काली भी कहा जाता है।

विनियोगः- ओम् अस्य मंत्रस्य भैरव ऋषिः, गायत्री छंदः, दक्षिणाकालिका देवता, कं बींजं, ईं शक्तिः, रं कीलकं ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास :-

ओम् भैरव ऋषये नमः शिरसि।

गायत्री छंदसे नमः मुखे।

दक्षिणा कालिका देवताः नमः हृदि।

कं बीजाय नमः गुह्ये।

ईं शक्तये नमः नाभौ ।

रं कीलकाय नमः पादयोः।

श्रीमहा काली प्रीतये पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

करन्यासः-

ओम् क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ओम् क्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ओम् क्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ओम् क्रैं अनामिकाभ्यां नमः।

ओम् क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ओम् क्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास :-

ओम् क्रां हृदयाय नमः।

ओम् क्रीं शिरसे स्वाहा।

ओम् क्रूं शिखायै वषट्।

ओम् क्रैं कवचाय हुम्।

ओम् क्रौं नेत्र त्रयाय वषट्।

ओम् क्रः अस्त्राय फट्।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

इसके उपरान्त भगवती काली का निम्नलिखित ध्यान करें:-

ध्यान

करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजां । कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमाला विभूषिताम्।

सद्यश्छिन्नशिरः खडगं वामोर्ध्व कराम्बुजां। अभयं वरदं चैव दक्षिणोर्ध्वाधः पाणिकाम्।।

महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरीं। कण्ठावसक्तमुण्डालीं गलद्रूधिरं चर्चिताम्।।

कृष्णावतंसतानीत शवयुग्म भयानकां। घोरदष्ट्रां करालास्यां पीनोन्नत-पयोधराम्।।

शवानां करसंघातैः कृतकांचीं हसन्मुखीं। सृक्कद्वयगलद् रक्तधारा विस्फुरिताननाम्।।

घोररावां महारौद्रीं श्मशानालय-वासीनीं। बालार्क मण्डलाका-लोचन-त्रितयान्विताम्।।

दन्तुरां दक्षिणव्यापि मुक्तालम्बि कचोच्चयां। शवरूपं महादेव हृदयोपरि संस्थिताम्।।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

शिवामिर्घोर रावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्वितां। महाकालेन च समं विपरीत-रतातुराम्।।

सुख प्रसन्न वदनां स्मेरानन सरोरूहां। एवं संचितयेत् कालीं सर्वकामार्थ सिद्धिदाम्।।

इस प्रकार ध्यान करने के उपरान्त भगवती काली के उपरोक्त मंत्र का जप करें। जप के अन्त में सम्पूर्ण जप मां भगवती को अर्पण कर दें।

साधकों को मेरा एक परामर्श और भी है कि वे जब भी मां काली अथवा किसी अन्य के मंत्रों का जप करें तो उनके समक्ष अपनी कोई लालसा या इच्छा व्यक्त न करें। वे आद्याशक्ति हैं , सम्पूर्ण सृष्टि की अधिष्ठात्री हैं, उनसे किसी भी साधक के मन की इच्छा छुपी हुई नहीं है। अतः अपनी इच्छा व्यक्त करके स्वयं को हल्का बनाना है। जब साधक अपनी कोई इच्छा लेकर मां के मंत्रों का जप करता है और संकल्प लेता है कि अपने अमुक कार्य की पूर्णता के लिए मैं अमुक देवी या देवता के इतनी संख्या में जप करूंगा और उसका वह कार्य पूर्ण हो जाता है तो मां की कृपा भी वंही समाप्त हो जाती है। आपने किसी कार्य की सफलता अथवा किसी भी प्रकार की प्राप्ति के लिए किसी भी देवी अथवा देवता के एक निश्चित संख्या में जप करने का संकल्प लिया और

आपका कार्य पूर्ण हो गया तो फिर भगवती या देवता से आपका कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता है। क्योंकि यह एक मात्र विनिमय है, आदान-प्रदान है। एक ऐसा विनिमय जो दो व्यक्तियों के मध्य परस्पर होता है। आपने किसी को कुछ दिया उसने बदले में आपका कार्य कर दिया। इसके उपरान्त कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध किसी प्रकार का नहीं रह जाता । आपको चाहिए कि आप जिस भी देवी-देवता का मंत्र जप करते हैं तो उसे केवल आप अपने देवता की प्रसन्नता के लिए कीजिए। यदि आपके मंत्र जप से आपका देवी-देवता प्रसन्न हो जाता है तो आपकी समस्त इच्छाएं आपके बिना व्यक्त किये ही पूर्ण हो जायेंगीं और अपने देवी -देवता से आपके सम्बन्ध भी प्रगाढ बने रहेगें। अतः आपको चाहिए कि उनसे एकत्व करने का प्रयास करें न कि कुछ मांगने का। यदि आप ऐसा करते हैं तो मेरा वचन है कि आपकी प्रत्येक साधना पूर्णता को प्राप्त करेगी।

If you want receive free of cost monthly magazine and all our articles on mantra tantra sadhana then please send your request to to sumitgirdharwal@yahoo.com or shaktisadhna@yahoo.com

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

Our Books

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi

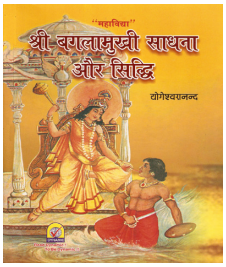

2. **Mantra Sadhana**

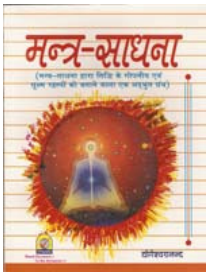

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

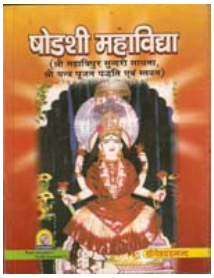

Account Number for Purchsing Books
Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298 (Current A/C)
IFSC Code – UTIB0001094

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org